Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research
Volume 1 | Issue 1 | July 2026
Available online at: https://kijmr.com/

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में भारतीय ज्ञान परंपरा का विद्यालयीय पाठ्यक्रम में समावेशन

प्रो0 नित्या श्रीवास्तव
आचार्य, एम. एड. विभाग, रामेश्वरम् इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग लखनऊ
Email ID: mamtanitya.s@gmail.com

Received: 01 July 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

Abstract (सारांश)

भारतीय शिक्षा-व्यवस्था लंबे समय तक ऐसे पाठ्यक्रम से प्रभावित रही जिसमें स्थानीय जीवन, भारतीय भाषाओं, पारंपरिक ज्ञान, लोककला, शिल्प, कृषि, पर्यावरणीय अनुभव और भारतीय चिंतन की विविध धाराओं को अपेक्षित स्थान नहीं मिल सका। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से जोड़ते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को विद्यालयीय पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक, प्रासंगिक और अनुभवात्मक रूप में सम्मिलित करने का स्पष्ट प्रस्ताव रखा है। नीति के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा में केवल प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन नहीं, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, अभियांत्रिकी, भाषा-विज्ञान, साहित्य, खेल, शासन, जनजातीय ज्ञान और पर्यावरण संरक्षण जैसी विविध ज्ञान-धाराएँ सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत शोध-लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—आधारभूत चरण 2022 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—विद्यालयी शिक्षा 2023 के विश्लेषण पर आधारित है। लेख में आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के चरणबद्ध समावेशन की संभावनाओं का विवेचन किया गया है। भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और पर्यावरण अध्ययन में स्थानीय एवं पारंपरिक ज्ञान के उपयोग के व्यावहारिक उदाहरण भी प्रस्तुत किए गए हैं।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का सार्थक समावेशन अलग और बोझिल विषय जोड़ने से नहीं, बल्कि वर्तमान विषयों, शिक्षण-पद्धतियों और विद्यालयी गतिविधियों में अंतर्विषयी रूप से उसे जोड़ने से संभव है। इसके लिए प्रमाण-आधारित सामग्री, प्रशिक्षित शिक्षक, स्थानीय समुदाय की सहभागिता, भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण संसाधन और रटने के स्थान पर परियोजना एवं अनुभव आधारित मूल्यांकन आवश्यक है। परंपरागत दावों का वैज्ञानिक परीक्षण तथा भारतीय समाज की भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय, जनजातीय और बौद्धिक विविधता का सम्मान इस प्रक्रिया की अनिवार्य शर्त है।

मुख्य शब्द: *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, विद्यालयीय पाठ्यक्रम, अनुभवात्मक अधिगम, मातृभाषा, स्थानीय ज्ञान, मूल्य शिक्षा।*

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी समाज को केवल रोजगार के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि उसके सांस्कृतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक दृष्टि और आत्मबोध का भी निर्माण करती है। जिस शिक्षा में विद्यार्थी के परिवार, भाषा, स्थानीय परिवेश, समुदाय और ऐतिहासिक अनुभव का कोई स्थान न हो, वह उसके लिए बाहरी सूचना तो बन सकती है, किंतु जीवंत ज्ञान नहीं बन पाती। इसलिए शिक्षा का स्थानीय और सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ना उसकी प्रभावशीलता की मूल शर्त है।

भारत की ज्ञान-परंपरा अत्यंत प्राचीन होने के साथ बहुल और विकासशील रही है। इसमें वैदिक एवं उपनिषदिक विचार, बौद्ध और जैन दर्शन, लोकायत चिंतन, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र, व्याकरण, साहित्य, कृषि, वास्तुकला, धातु-विज्ञान, जल-प्रबंधन, कला, संगीत, शिल्प तथा जनजातीय समुदायों के अनुभव सम्मिलित हैं। यह परंपरा केवल संस्कृत ग्रंथों में सुरक्षित ज्ञान तक सीमित नहीं है। तमिल, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश,

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. KIJMR Published by Kalakankar Publishing.

फारसी और विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य तथा लोकगीतों, कथाओं, कहावतों, हस्तकलाओं और मौखिक परंपराओं में संरक्षित ज्ञान भी इसका अभिन्न अंग है।

औपनिवेशिक काल में विकसित शिक्षा-व्यवस्था ने आधुनिक प्रशासनिक और वैज्ञानिक शिक्षा के अवसर प्रदान किए, किंतु उसके कारण विद्यालयों तथा विद्यार्थियों के स्थानीय जीवन के बीच दूरी भी बढ़ी। विद्यार्थियों को अनेक बार ऐसे उदाहरणों, कथाओं और अवधारणाओं से पढ़ाया गया जिनका उनके परिवेश से प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। परिणामस्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा या तो पाठ्यक्रम के बाहर चली गई अथवा उसे केवल अतीत के गौरवपूर्ण वर्णन तक सीमित कर दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 29 जुलाई 2020 को स्वीकृति प्रदान की। यह नीति शिक्षा को पहुँच, समानता, गुणवत्ता, वहनीयता और उत्तरदायित्व के आधार पर परिवर्तित करने की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसके मूल सिद्धांतों में भारत की विविध प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति, ज्ञान-प्रणालियों और परंपराओं के प्रति समझ तथा आत्मीयता विकसित करना सम्मिलित है।

नीति ने भारतीय ज्ञान परंपरा को किसी वैकल्पिक सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि समग्र शिक्षा के आवश्यक आधार के रूप में स्वीकार किया है। इस कारण यह समझना आवश्यक है कि विद्यालयीय पाठ्यक्रम में इसका समावेशन क्यों किया जाए, किन क्षेत्रों में किया जाए और किस प्रकार किया जाए कि शिक्षा वैज्ञानिक, समावेशी तथा वर्तमान जीवन के लिए उपयोगी बनी रहे।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा का सामान्य अर्थ भारत में विभिन्न कालखंडों और समुदायों द्वारा विकसित ज्ञान, अनुभव, विचार, कौशल और जीवन-पद्धतियों से है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों के साथ वे व्यावहारिक ज्ञान-रूप भी सम्मिलित हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवारों और समुदायों के माध्यम से संचारित हुए हैं।

भारतीय ज्ञान-दृष्टि की एक विशेषता जीवन के विभिन्न पक्षों को परस्पर संबद्ध मानना है। मनुष्य, प्रकृति, समाज, शरीर, मन और नैतिकता को पूरी तरह अलग-अलग क्षेत्रों के रूप में नहीं देखा गया। योग शरीर और मन के संतुलन पर बल देता है; आयुर्वेद स्वास्थ्य को जीवनचर्या, आहार, ऋतु और पर्यावरण से जोड़ता है; बौद्ध दर्शन परस्पर निर्भरता और करुणा की शिक्षा देता है; जैन अनेकांतवाद सत्य के अनेक पक्षों को स्वीकार करता है; जबकि लोक और जनजातीय ज्ञान प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व तथा सामुदायिक उत्तरदायित्व पर आधारित है।

भारतीय गणित में संख्या-पद्धति, शून्य, बीजगणित और ज्यामिति से संबंधित उल्लेखनीय विकास हुआ। खगोलशास्त्र में ग्रहों, समय-गणना और आकाशीय घटनाओं का अध्ययन किया गया। कृषि और जल-प्रबंधन में स्थानीय मिट्टी, वर्षा, फसलों और भूगोल के अनुसार विविध प्रणालियाँ विकसित हुईं। मंदिरों, बावड़ियों, दुर्गों, भवनों और नगरों के निर्माण में गणित, शिल्प, जलवायु और स्थानीय सामग्री का समन्वय दिखाई देता है। फिर भी भारतीय ज्ञान परंपरा को एकरूप, विवादरहित और सर्वथा पूर्ण व्यवस्था मानना उचित नहीं है। भारतीय चिंतन में आस्तिक और नास्तिक, आध्यात्मिक और भौतिकवादी, शास्त्रीय और लोक तथा वैदिक और अवैदिक विचार समानांतर रूप से विकसित हुए। किसी परंपरागत मान्यता को केवल प्राचीन होने के कारण वैज्ञानिक सत्य नहीं माना जा सकता। विद्यालयीय पाठ्यक्रम में उसका समावेशन प्रमाण, तर्क, ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान सामाजिक उपयोगिता के आधार पर होना चाहिए।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करना।
2. विद्यालयी पाठ्यक्रम के विभिन्न चरणों में भारतीय ज्ञान के समावेशन की संभावनाओं का अध्ययन करना।
3. भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, खेल और व्यावसायिक शिक्षा में इसके अंतर्विषयी उपयोग को स्पष्ट करना।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन में शिक्षक, समुदाय और शिक्षण-संसाधनों की भूमिका का विवेचन करना।
5. समावेशन की व्यावहारिक, शैक्षिक और वैचारिक चुनौतियों की पहचान करते हुए समाधान प्रस्तुत करना।

4. शोध-पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—आधारभूत चरण 2022, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—विद्यालयी शिक्षा 2023, शिक्षा मंत्रालय की भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधी सामग्री तथा एनसीईआरटी के प्रासंगिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है।

दस्तावेजों का विषयगत विश्लेषण करते हुए भारतीय भाषाओं, स्थानीय संदर्भ, पारंपरिक ज्ञान, जनजातीय ज्ञान, कला, शिल्प, व्यावसायिक शिक्षा, नैतिक मूल्यों, अनुभवात्मक शिक्षण और पाठ्यचर्या निर्माण से संबंधित प्रावधानों को प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया। यह लेख किसी प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित नहीं है; अतः इसमें कोई काल्पनिक नमूना, प्रतिशत या सांख्यिकीय निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को विस्तृत और बहुविषयी रूप में परिभाषित करती है। नीति के अनुच्छेद 4.27 के अनुसार "भारत का ज्ञान" प्राचीन भारत के ज्ञान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आधुनिक भारत की उपलब्धियों, चुनौतियों और भविष्य की आकांक्षाओं को भी सम्मिलित करेगा। नीति स्पष्ट करती है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों में जनजातीय ज्ञान और देशज शिक्षण-पद्धतियों को शामिल करते हुए गणित, खगोलशास्त्र, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, अभियांत्रिकी, भाषा-विज्ञान, साहित्य, खेल, शासन और संरक्षण जैसे क्षेत्रों को वैज्ञानिक तथा प्रासंगिक रूप में पाठ्यक्रम से जोड़ा जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक रोचक वैकल्पिक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने की भी अनुशंसा की गई है।

इस प्रावधान का महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह भारतीय ज्ञान को केवल इतिहास या संस्कृति विषय तक सीमित नहीं करता। उदाहरण के लिए, पारंपरिक जल-संरक्षण को भूगोल और पर्यावरण विज्ञान में, भारतीय गणितज्ञों के योगदान को गणित में, औषधीय पौधों के स्थानीय ज्ञान को जीवविज्ञान में तथा लोककथाओं को भाषा-शिक्षण में सम्मिलित किया जा सकता है।

नीति भारतीय भाषाओं को ज्ञान और शिक्षा के प्रमुख माध्यम के रूप में स्वीकार करती है। बालक अपनी परिचित भाषा में अवधारणाओं को अधिक सहजता से समझता है। मातृभाषा, घर की भाषा अथवा स्थानीय भाषा में शिक्षण का प्रावधान केवल भाषायी संरक्षण नहीं, बल्कि ज्ञान तक समान पहुँच का प्रश्न है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्थानीय साहित्य, इतिहास, लोकज्ञान और सामुदायिक अनुभव स्वाभाविक रूप से कक्षा में प्रवेश करते हैं।

नीति कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए दस दिन की "बैग-रहित" अवधि की कल्पना करती है, जिसमें वे बढ़ई, कुम्हार, माली, कलाकार और अन्य स्थानीय कौशल-विशेषज्ञों के साथ कार्य-अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों को स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों, कलाकारों, शिल्पकारों और संस्थानों से परिचित कराने की भी अनुशंसा की गई है। यह व्यवस्था पारंपरिक ज्ञान को पुस्तक से बाहर निकालकर वास्तविक जीवन, श्रम और समुदाय से जोड़ सकती है।

नीति में सेवा, अहिंसा, सत्य, स्वच्छता, शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, पर्यावरण-सम्मान, करुणा, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे पारंपरिक भारतीय तथा संवैधानिक मूल्यों को विद्यार्थियों में विकसित करने की बात कही गई है। पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश और अन्य भारतीय कथाओं के अध्ययन को नैतिक विवेक और बहुपक्षीय चिंतन विकसित करने का माध्यम माना गया है।

6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाओं में भारतीय संदर्भ

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—आधारभूत चरण 2022 ने तीन से आठ वर्ष की आयु के बच्चों की शिक्षा को स्थानीय और भारतीय संदर्भ से जोड़ने पर विशेष बल दिया है। रूपरेखा के अनुसार बच्चों के परिवार और समुदाय से जुड़ी कथाएँ, गीत, भोजन, वस्त्र, कला, संगीत, नृत्य, खेल और उत्सव उनके विद्यालयी अनुभव का हिस्सा बनने चाहिए। पाठ्यचर्या और शिक्षण-पद्धति को स्थानीय संस्कृति, परंपरा, भाषा, भूगोल, प्राचीन एवं समकालीन ज्ञान और देशज शिक्षण-पद्धतियों से जोड़ने पर शिक्षा अधिक परिचित, रोचक और प्रभावी बनती है।

यह दृष्टिकोण मानता है कि बच्चा विद्यालय में रिक्त मस्तिष्क लेकर नहीं आता। वह परिवार और समुदाय से भाषा, व्यवहार, गीत, कहानियाँ, खेल, प्रकृति और कामकाज से संबंधित पर्याप्त अनुभव लेकर आता है। विद्यालय का दायित्व इन अनुभवों को अस्वीकार करना नहीं, बल्कि उन्हें व्यवस्थित ज्ञान से जोड़ना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा—विद्यालयी शिक्षा 2023 में "भारत में जड़ें और भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ" एक स्वतंत्र महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। रूपरेखा कहती है कि पाठ्यचर्या को भारतीय और स्थानीय संस्कृति, भाषा, दर्शन, भूगोल, सामाजिक एवं वैज्ञानिक आवश्यकताओं तथा देशज शिक्षण-पद्धतियों से जोड़ा जाना चाहिए। भाषा से गणित, दर्शन से कला, पारिस्थितिकी से चिकित्सा, वास्तुकला से कृषि और शिल्प से प्रौद्योगिकी तक भारतीय योगदान को पाठ्यचर्या में प्रासंगिक रूप से शामिल किया जा सकता है।

रूपरेखा यह भी स्पष्ट करती है कि भारतीय ज्ञान का समावेशन पूरे विद्यालयी अनुभव में होना चाहिए। इसके अतिरिक्त कक्षा 11 और 12 के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक रोचक वैकल्पिक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराया जा सकता है।

7. विद्यालयी चरणों के अनुसार समावेशन

7.1 आधारभूत चरण

आधारभूत चरण में भारतीय ज्ञान परंपरा को किसी औपचारिक और कठिन विषय के रूप में पढ़ाना उपयुक्त नहीं होगा। इस स्तर पर खेल, कहानी, कविता, चित्र, संगीत, नृत्य, प्रकृति-अवलोकन और गतिविधि आधारित शिक्षण सबसे प्रभावी होते हैं।

स्थानीय लोककथाओं, पंचतंत्र, जातक और हितोपदेश की आयु-उपयुक्त कहानियों का उपयोग भाषा और नैतिक विकास के लिए किया जा सकता है। कहानी सुनाने के बाद बच्चों से पात्रों के व्यवहार, निर्णय और परिणाम पर चर्चा कराई जा सकती है। इससे भाषा-कौशल के साथ विचार करने, प्रश्न पूछने और सही-गलत के कारण समझने की क्षमता विकसित होगी।

गिनती, आकृतियाँ और क्रम सिखाने के लिए रंगोली, अल्पना, कोलम, लोकखिलौने और पारंपरिक खेल उपयोगी हो सकते हैं। स्थानीय बीज, पत्तियाँ, कंकड़, शंख या मिट्टी की वस्तुएँ शिक्षण-सामग्री के रूप में प्रयोग की जा सकती हैं। इससे गणितीय अवधारणाएँ बच्चे के अनुभव से जुड़ती हैं।

प्रकृति के अध्ययन में स्थानीय पेड़-पौधों, पक्षियों, ऋतुओं, जलस्रोतों और भोजन पर बातचीत की जा सकती है। परिवार के बुजुर्गों को विद्यालय में आमंत्रित कर स्थानीय गीत, कहानियाँ और खेल साझा कराए जा सकते हैं। इस स्तर पर उद्देश्य ऐतिहासिक विवरण देना नहीं, बल्कि बच्चे में अपनी भाषा, परिवेश और समुदाय के प्रति जिज्ञासा तथा सम्मान विकसित करना है।

7.2 प्रारंभिक या तैयारी चरण

कक्षा 3 से 5 के स्तर पर विद्यार्थी पढ़ने, लिखने, अवलोकन और सरल वर्गीकरण की क्षमताएँ विकसित कर चुके होते हैं। यहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थानीय परियोजनाओं और विषयगत गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है।

विद्यार्थी अपने क्षेत्र के प्रमुख भोजन, वस्त्र, त्योहार, कृषि, लोककला और ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी एकत्र कर सकते हैं। स्थानीय नदी, तालाब, कुएँ या बावड़ी के इतिहास पर चित्रात्मक परियोजना बनाई जा सकती है। भाषा की कक्षा में लोककथा लिखना, परिवार में प्रचलित कहावतों का अर्थ समझना और स्थानीय बोली के शब्दों का शब्दकोश बनाना उपयोगी होगा।

गणित में भारतीय संख्या-पद्धति का इतिहास, मानसिक गणना की स्थानीय विधियाँ और शिल्पों में प्रयुक्त सममिति का परिचय दिया जा सकता है। विज्ञान में परंपरागत खाद्य-संरक्षण, मिट्टी के बर्तन में जल ठंडा होने की प्रक्रिया, छाया से दिशा का अनुमान और मौसमी भोजन जैसे उदाहरणों को वैज्ञानिक कारणों से जोड़ना चाहिए।

यह आवश्यक है कि शिक्षक परंपरागत प्रथा को वैज्ञानिक तथ्य के रूप में सीधे स्वीकार न करे। बच्चों को अवलोकन और छोटे प्रयोगों द्वारा यह जाँचने का अवसर मिले कि कोई परंपरागत विधि किस परिस्थिति में उपयोगी है और उसकी सीमाएँ क्या हैं।

7.3 मध्य चरण

कक्षा 6 से 8 में भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन अधिक व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक हो सकता है। विद्यार्थी स्थानीय कृषि-पद्धति, जल-प्रबंधन, वास्तुकला, औषधीय पौधों, हस्तशिल्प और खेलों पर परियोजना कार्य कर सकते हैं।

गणित में आर्यभट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य के योगदान का आयु-उपयुक्त परिचय दिया जा सकता है। शुल्बसूत्रों में ज्यामितीय निर्माण के उदाहरणों की आधुनिक ज्यामिति से तुलना कराई जा सकती है। इसका उद्देश्य किसी एक सभ्यता को श्रेष्ठ सिद्ध करना नहीं, बल्कि यह समझाना होना चाहिए कि गणित का विकास विभिन्न समाजों के दीर्घकालीन प्रयास से हुआ है।

विज्ञान में धातु-कर्म, रंग निर्माण, वस्त्र रंगाई, कृषि, औषधीय पौधों और पारंपरिक मौसम-ज्ञान का अध्ययन किया जा सकता है। विद्यार्थी स्थानीय दावों का सरल वैज्ञानिक परीक्षण करें। उदाहरणतः किसी पौधे के औषधीय उपयोग का उल्लेख करते समय यह स्पष्ट किया जाए कि लोकप्रयोग और चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित उपचार एक ही बात नहीं हैं।

सामाजिक विज्ञान में ग्राम-व्यवस्था, स्थानीय शासन, शिल्प समुदाय, बाजार, यात्राएँ, स्थापत्य, जनजातीय समाज और ज्ञान के प्रसार का अध्ययन कराया जा सकता है। पाठ्यपुस्तक में केवल राजवंशों और युद्धों के बजाय किसान, शिल्पकार, चिकित्सक, गणितज्ञ, स्त्रियाँ, संत, सूफी और जनजातीय समुदाय भी ज्ञान-निर्माता के रूप में दिखाई देने चाहिए।

बैग-रहित दिवसों में विद्यार्थी बढ़ईगीरी, मिट्टी-कला, बागवानी, हथकरघा, स्थानीय खाद्य-प्रसंस्करण या अन्य कौशलों का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। इसे केवल प्रदर्शन तक सीमित न रखते हुए मापन, सामग्री, लागत, पर्यावरण और कौशल के विज्ञान से जोड़ा जाना चाहिए।

7.4 माध्यमिक चरण

कक्षा 9 से 12 में विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक, तुलनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। इस स्तर पर अलग वैकल्पिक पाठ्यक्रम के साथ विषयों में अंतर्विषयी इकाइयाँ भी विकसित की जा सकती हैं।

गणित में भारतीय गणितीय ग्रंथों की चयनित समस्याओं की आधुनिक विधियों से तुलना हो सकती है। विज्ञान में आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, धातु-विज्ञान, कृषि और पर्यावरणीय ज्ञान के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन कराया जा सकता है। विद्यार्थियों को प्राथमिक स्रोतों, अनुवादों और आधुनिक शोध का उपयोग करते हुए प्रमाण की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना सिखाया जाना चाहिए।

दर्शन और सामाजिक विज्ञान में उपनिषद, बौद्ध, जैन, लोकायत, भक्ति, सूफी और आधुनिक भारतीय चिंतन के चयनित विचारों पर संवाद कराया जा सकता है। न्याय, सत्य, अहिंसा, कर्तव्य, स्वतंत्रता, समानता और मानव गरिमा जैसे प्रश्नों की भारतीय संविधान तथा वर्तमान सामाजिक जीवन से तुलना की जा सकती है।

विद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा पर वैकल्पिक पाठ्यक्रम चलाए तो वह केवल तथ्यों और प्रसिद्ध व्यक्तियों की सूची न बने। उसमें ज्ञान का स्वरूप, प्रमाण, भाषा, ग्रंथ, लोकज्ञान, समाज में ज्ञान की उपलब्धता, वैज्ञानिक परीक्षण, पर्यावरण और आधुनिक अनुप्रयोग जैसे विषय होने चाहिए।

8. विषयवार समावेशन की संभावनाएँ

भाषा और साहित्य

भारतीय भाषाओं का साहित्य ज्ञान, इतिहास और सामाजिक अनुभव का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। पाठ्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों की लोककथाएँ, कविताएँ, यात्रा-वृत्तांत, आत्मकथाएँ और मौखिक परंपराएँ सम्मिलित की जा सकती हैं। अनुवाद गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय भाषाओं की समानताओं और विविधताओं को समझ सकते हैं।

गणित

भारतीय गणितज्ञों के योगदान को ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ाते हुए संख्या-पद्धति, बीजगणित, ज्यामिति, क्रमचय और खगोलीय गणना से जोड़ा जा सकता है। रंगोली, बुनाई, स्थापत्य और लोकशिल्पों में सममिति, अनुपात और ज्यामितीय प्रतिरूपों का अध्ययन गणित को अनुभवात्मक बना सकता है।

विज्ञान

पारंपरिक कृषि, जल-संचयन, खाद्य-संरक्षण, धातु-कर्म, प्राकृतिक रंग और औषधीय वनस्पतियों को वैज्ञानिक प्रश्नों में बदला जा सकता है। विद्यार्थी परिकल्पना बनाएँ, प्रयोग करें, परिणाम दर्ज करें और निष्कर्ष निकालें। इस प्रकार परंपरा वैज्ञानिक खोज की सामग्री बनेगी, वैज्ञानिक प्रमाण का विकल्प नहीं।

सामाजिक विज्ञान

स्थानीय इतिहास, ग्राम संस्थाएँ, व्यापार मार्ग, हस्तकला, जनजातीय जीवन, सामाजिक सुधार आंदोलन और भारतीय संविधान को परस्पर संबद्ध रूप में पढ़ाया जा सकता है। इतिहास में उपलब्धियों के साथ जाति, लैंगिक असमानता और ज्ञान तक सीमित पहुँच के प्रश्न भी उठाए जाने चाहिए।

कला और संगीत

भारतीय शास्त्रीय तथा लोकसंगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, कठपुतली, बुनाई और मिट्टी-कला को सह-पाठ्यक्रम तक सीमित न रखा जाए। इन कलाओं में निहित इतिहास, गणित, सामग्री-विज्ञान, पर्यावरण और सामाजिक अर्थों का अध्ययन भी हो।

योग, खेल और स्वास्थ्य

योग को केवल कुछ आसनों के प्रदर्शन के रूप में नहीं, बल्कि सुरक्षित शारीरिक अभ्यास, श्वसन, ध्यान और स्वास्थ्य-जागरूकता के साथ पढ़ाया जाना चाहिए। आयु, क्षमता और स्वास्थ्य-स्थिति के अनुसार प्रशिक्षित मार्गदर्शन आवश्यक है। पारंपरिक भारतीय खेल सहयोग, रणनीति, संतुलन और शारीरिक सक्रियता बढ़ाने के साधन बन सकते हैं। शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग ने विद्यालयों में भारतीय खेलों के परिचय के लिए “75 भारतीय खेल” जैसी पहल भी विकसित की।

9. शिक्षण-पद्धति और मूल्यांकन

भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन तभी प्रभावी होगा जब शिक्षण रटने और परीक्षा-केंद्रित पद्धति से आगे बढ़े। केवल प्राचीन ग्रंथों, वैज्ञानिकों और उपलब्धियों के नाम याद करा देना ज्ञान परंपरा की मूल भावना के विपरीत होगा।

संवाद, प्रश्नोत्तर और वाद-विवाद भारतीय बौद्धिक परंपरा के प्रमुख साधन रहे हैं। कक्षा में विद्यार्थियों को किसी विचार के पक्ष-विपक्ष पर चर्चा, प्रमाण की जाँच और विभिन्न दृष्टिकोणों की तुलना का अवसर मिलना चाहिए। कहानी, नाटक, क्षेत्र-भ्रमण, साक्षात्कार, स्थानीय सर्वेक्षण, शिल्प-निर्माण और प्रयोग उपयोगी शिक्षण-विधियाँ हो सकती हैं।

मूल्यांकन में लिखित परीक्षा के साथ परियोजना, पोर्टफोलियो, मौखिक प्रस्तुति, प्रयोग, क्षेत्र-डायरी और समूह-कार्य को स्थान मिलना चाहिए। यदि विद्यार्थी स्थानीय जलस्रोत का अध्ययन करता है, तो उसका मूल्यांकन सूचना की मात्रा के बजाय प्रश्न निर्माण, स्रोतों की विश्वसनीयता, वैज्ञानिक व्याख्या और समाधान की व्यावहारिकता पर किया जाए।

नैतिक मूल्यों का मूल्यांकन परिभाषाएँ लिखवाकर नहीं किया जा सकता। सहयोग, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, ईमानदारी और सामुदायिक सेवा को विद्यालयी व्यवहार और गतिविधियों के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।

10. शिक्षक की भूमिका और प्रशिक्षण

भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन में शिक्षक की भूमिका निर्णायक है। शिक्षक को केवल तैयार सामग्री पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि स्थानीय ज्ञान और आधुनिक विषयों के बीच सेतु बनना होगा। इसके लिए उसे इतिहास, संस्कृति, स्थानीय भाषा, वैज्ञानिक पद्धति और समावेशी शिक्षण की आधारभूत समझ चाहिए।

शिक्षक-प्रशिक्षण में यह स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान परंपरा किसी एक धर्म, भाषा, क्षेत्र अथवा जाति तक सीमित नहीं है। प्रशिक्षण में वैदिक ज्ञान के साथ बौद्ध, जैन, लोकायत, भक्ति, सूफी, जनजातीय, लोक और आधुनिक भारतीय ज्ञान-परंपराओं को भी स्थान मिलना चाहिए।

शिक्षक को प्रमाणित और अप्रमाणित दावों में अंतर करना आना चाहिए। इंटरनेट पर प्रसारित प्रत्येक प्राचीन वैज्ञानिक दावे को कक्षा में प्रस्तुत करना उचित नहीं है। पाठ्यसामग्री के चयन में इतिहासकारों, वैज्ञानिकों, भाषा-विशेषज्ञों, शिक्षकों और स्थानीय ज्ञान-धारकों का सहयोग लिया जाना चाहिए।

विद्यालय स्थानीय कलाकारों, किसानों, शिल्पकारों, वनस्पति-विशेषज्ञों और वरिष्ठ नागरिकों को संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित कर सकते हैं। किंतु समुदाय से प्राप्त जानकारी का सम्मानपूर्वक अभिलेखीकरण किया जाए और उसे बिना अनुमति व्यावसायिक अथवा बौद्धिक संपदा के रूप में उपयोग न किया जाए।

11. डिजिटल संसाधनों की भूमिका

भारत की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को देखते हुए प्रत्येक ज्ञान-स्रोत को मुद्रित पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करना संभव नहीं है। डिजिटल मंच स्थानीय कथाओं, कला, शिल्प, भाषाओं, अभिलेखों और विशेषज्ञ व्याख्यानों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में सहायता कर सकते हैं।

दीक्षा राष्ट्रीय विद्यालयी शिक्षा मंच के रूप में शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए बहुभाषी डिजिटल सामग्री तथा प्रशिक्षण उपलब्ध कराता है। इसका उपयोग भारतीय भाषाओं में स्थानीय ज्ञान से संबंधित प्रमाणित ऑडियो, वीडियो, चित्र, गतिविधि और परियोजना सामग्री साझा करने के लिए किया जा सकता है।

डिजिटल सामग्री को पाठ्यपुस्तक का पूर्ण विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट, उपकरण और बिजली की असमान उपलब्धता के कारण ऑफलाइन सामग्री, सामुदायिक पुस्तकालय, स्थानीय संग्रहालय और विद्यालयी संसाधन-केंद्र भी आवश्यक हैं।

12. समावेशन की प्रमुख चुनौतियाँ

पहली चुनौती भारतीय ज्ञान परंपरा की स्पष्ट और समावेशी परिभाषा की है। इसे केवल संस्कृत ग्रंथों अथवा धार्मिक ज्ञान तक सीमित करने पर भारत की व्यापक भाषायी, जनजातीय और लोक-संपदा उपेक्षित हो जाएगी।

दूसरी चुनौती अप्रमाणित दावों की है। प्राचीन ग्रंथों में आधुनिक विज्ञान की प्रत्येक खोज उपस्थित होने का दावा विद्यार्थियों की वैज्ञानिक दृष्टि को कमजोर कर सकता है। ऐतिहासिक उपलब्धि और आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाण में अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

तीसरी चुनौती पाठ्यक्रम के अतिरिक्त बोझ की है। पहले से विस्तृत पाठ्यक्रम में अलग-अलग तथ्य जोड़ देने से विद्यार्थियों पर भार बढ़ेगा। इसलिए भारतीय ज्ञान को विषयों की अवधारणाओं और गतिविधियों में समेकित किया जाना चाहिए।

चौथी चुनौती शिक्षक की तैयारी है। पर्याप्त प्रशिक्षण के बिना शिक्षक या तो सामग्री को सतही गौरवगान में बदल सकता है अथवा उसे अनावश्यक अतिरिक्त विषय समझकर उपेक्षित कर सकता है।

पाँचवीं चुनौती प्रतिनिधित्व की है। पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, स्त्रियों, दलितों, जनजातीय समुदायों, किसानों और शिल्पकारों के योगदान का संतुलित प्रतिनिधित्व होना चाहिए। ज्ञान के इतिहास को केवल राजाओं और उच्चवर्गीय विद्वानों की उपलब्धियों तक सीमित नहीं किया जा सकता।

छठी चुनौती स्थानीय विविधता की है। एक राज्य का पारंपरिक ज्ञान दूसरे क्षेत्र के लिए समान रूप से प्रासंगिक नहीं हो सकता। राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सिद्धांत निर्धारित किए जा सकते हैं, किंतु पाठ्यसामग्री में राज्यों, जिलों और समुदायों के लिए पर्याप्त लचीलापन आवश्यक है।

सातवीं चुनौती बौद्धिक संपदा और सामुदायिक अधिकारों की है। जनजातीय औषधीय ज्ञान, बीज, कला और शिल्प का अभिलेखीकरण संबंधित समुदाय की सहमति और अधिकारों का सम्मान करते हुए होना चाहिए।

13. प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव

विद्यालयीय पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावी समावेशन के लिए सबसे पहले राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर विषयवार प्रामाणिक स्रोत-संग्रह तैयार किया जाना चाहिए। सामग्री का परीक्षण विषय-विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, इतिहासकार, भाषाविद्, शिक्षक और स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधि संयुक्त रूप से करें।

प्रत्येक कक्षा और विषय के लिए स्पष्ट अधिगम-परिणाम निर्धारित हों। यह बताया जाए कि किसी स्थानीय कथा, शिल्प या पारंपरिक विधि के अध्ययन से विद्यार्थी कौन-सी भाषा, गणितीय, वैज्ञानिक, सामाजिक अथवा नैतिक क्षमता अर्जित करेगा।

आधारभूत स्तर पर कहानी, खेल और स्थानीय अनुभव; प्रारंभिक स्तर पर अवलोकन एवं सरल परियोजना; मध्य स्तर पर प्रयोग और क्षेत्र-अध्ययन तथा माध्यमिक स्तर पर तुलनात्मक और आलोचनात्मक विश्लेषण अपनाया जाए।

विद्यालयों को स्थानीय पाठ्यचर्या का एक सीमित, परंतु सार्थक भाग विकसित करने की स्वतंत्रता मिले। प्रत्येक विद्यालय अपने क्षेत्र के जलस्रोत, जैवविविधता, इतिहास, शिल्प, भाषा और जीविका पर वार्षिक परियोजना चला सकता है।

शिक्षकों के लिए एक बार की कार्यशाला के बजाय निरंतर व्यावसायिक विकास, डिजिटल पाठ्यक्रम, विषयगत मॉड्यूल और मार्गदर्शक सामग्री उपलब्ध कराई जाए। स्थानीय संसाधन व्यक्तियों के साथ कार्य करने के लिए विद्यालय स्तर पर वित्तीय और प्रशासनिक प्रावधान भी हों।

पाठ्यपुस्तकों में भारतीय उपलब्धियों को विश्व-ज्ञान के व्यापक संदर्भ में रखा जाए। विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि ज्ञान किसी एक सभ्यता की एकाधिकार संपत्ति नहीं है। भारतीय, यूनानी, चीनी, अरब, अफ्रीकी, यूरोपीय और अन्य ज्ञान-परंपराओं के बीच आदान-प्रदान ने मानव सभ्यता को समृद्ध किया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को संवैधानिक मूल्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। ऐसी किसी प्रथा का समर्थन नहीं किया जा सकता जो समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक न्याय अथवा मानव गरिमा के विरुद्ध हो। परंपरा का सम्मान उसके विवेकपूर्ण पुनर्पाठ में है, अंधानुकरण में नहीं।

14. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को विद्यालयीय शिक्षा के केंद्र से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान किया है। नीति का दृष्टिकोण केवल प्राचीन उपलब्धियों का परिचय देना नहीं, बल्कि शिक्षा को भारतीय भाषाओं, स्थानीय जीवन, पर्यावरण, कला, शिल्प, नैतिकता और समुदाय से जोड़ना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वास्तविक समावेशन तभी होगा जब विद्यार्थी उसे अपने आसपास के जीवन में अनुभव करे। स्थानीय जलस्रोत का अध्ययन, शिल्पकार से संवाद, लोककथा का विश्लेषण, पारंपरिक कृषि-विधि का वैज्ञानिक परीक्षण और भारतीय गणितीय विचारों की आधुनिक अवधारणाओं से तुलना इस दिशा में अधिक उपयोगी हैं बनिस्बत तथ्य याद कराने के।

समावेशन का उद्देश्य अतीत की ओर वापसी नहीं, बल्कि अतीत और वर्तमान के बीच रचनात्मक संवाद स्थापित करना होना चाहिए। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर जाँचना, उपयोगी स्थानीय अनुभवों को संरक्षित करना तथा अनुपयोगी और भेदभावपूर्ण परंपराओं की आलोचना करना शिक्षा की जिम्मेदारी है।

एक संतुलित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति आत्मविश्वास उत्पन्न करेगा, किंतु साथ ही उन्हें प्रश्न पूछने, प्रमाण खोजने और विविध विचारों का सम्मान करने की क्षमता भी देगा। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का विद्यालयीय समावेशन सांस्कृतिक गौरव के साथ वैज्ञानिक चेतना, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और वैश्विक दृष्टि से युक्त नागरिकों के निर्माण का माध्यम बन सकता है।

संदर्भ सूची

[1]. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।

[2]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2022). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा: आधारभूत चरण. एनसीईआरटी।

[3]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2023). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा: विद्यालयी शिक्षा. एनसीईआरटी।

[4]. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली: राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन. भारत सरकार।

[5]. भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग. (प्रकाशन वर्ष अनुपलब्ध). भारतीय ज्ञान प्रणालियों का उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

[6]. Dewey, J. (1938). Experience and education. Macmillan.

[7]. Gandhi, M. K. (1953). Basic education. Navajivan Publishing House.

[8]. Kumar, K. (2005). Political agenda of education: A study of colonialist and nationalist ideas. Sage Publications.

[9]. National Council of Educational Research and Training. (2005). National curriculum framework 2005. NCERT.

[10]. National Council of Educational Research and Training. (2023). National curriculum framework for school education. NCERT.

[11]. UNESCO. (2017). Local knowledge, global goals. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

[12]. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Harvard University Press।

Cite this Article:

नित्या श्रीवास्तव (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के आलोक में भारतीय ज्ञान परंपरा का विद्यालयीय पाठ्यक्रम में समावेशन. Kalakankar International Journal of Multidisciplinary Research, 1(1), 19–26.

Journal URL: *https://kijmr.com/*

Disclaimer and Publisher's Note: *The views, interpretations, and conclusions expressed in this article are entirely those of the author(s). The publisher and editors do not accept responsibility for any inaccuracies, copyright infringements, legal claims, or losses resulting from the publication or use of this content.*